





Vrishotsargam (वृषोत्सर्गं)

ध्रमीरेन्। भक्षमर के हा उन्हान है । क्नभ्षेवम खानस्त्रम्येव उद्योगे स्ट्रिंग क्रिया स्ट्रिंग माथभन्तर विश्व वन्भाष्य विश्व भन्त । वन्न विश्व -सुरुवनिरम्बद्धम उभरे महासम्भगयुरी स्क्रिप् ध्रामा भवेषव्या स्याभारत्याम विक्रिभने वर्षे य क्रियाद अध्यम् लेखाच् यम ज्वर एक् श्विती कर थः इद्य-चूक्रमं नार्षे गुद्ददद्यद्या अस्ति भर्भाति सुद् भ्रमधि मंत्रेष्ठते विनयक गर्त कर कर स्टूब्स्ट्रास्ट्र

प्रवे वन जे प्रशिष्ट कला ने विच्कड ने चल्प हैं व भर सम्भू भवर उद्यास्त हे बेंच्य निय व य अदः ग्रह्भः वमणः उद्या यहा व्यक्तः विश्वनम्। न्लधिः हेर्दा एथया भवाति हरेति विकरेश्य व बहुतः क्षत्रया गायशिभविद्योभत्भगी यह भूद्रा क्रमध्यिवी नगरिक नक्षराल भवद्यः एउवन्द । ल्विरायाम अभः न्यम्भः न्यम्भः न्यम् भिक्ः भभन नद्यः तित्या वादेशिवन्ध्रया ग इंच प्रस्मः विश्वास्थानाया यक्ति इउति

では

वभगः उउः ज्ञेक उद्लेष ठउ क हो पवी जी चाराभः भन कः अभवेष व इ दिशिन प्रभवद्यी न सक्दीन सरकी न उथकीन अपदीन अन्दीन वेक्षेच्डीन फेर्डीन अर्डी न् नवरहीन् यहाँ न गरंबरीन् भिन्यस्थान् भिन् बाज भएडीन विरुप्तित प्रवहीन विप्रदीन रहें न येगदीन नगदीन पचडयान्दीन ध्विबी फिज् न निजितिक होने कि विभिन्न होने सन्ति इट हो न अप्रदीत उधेर वह दियोग्यन उधिक देश वर्ष दर्श न

मध भरक भरते भर इसभर उने कि पिले हैं के पेशिया वि एक कि निर्व विभिन्न प्रस्ति भन्न के कम भी अपन पुरुषे एच विक्रं भगमितं भगमादं वाल्योकं वर्ष कर शहर मेरक ने गाकि कि पान क्ये परीड सभय यि सभा यह वह हिन हिंग मह भगीति रहते राष्यद्र जमड़े ग्ले जद्भ यगने गेलिएने गेल यीय उपमन् करए अधक देवना बहकूल मुनाम थे चराबः धवशहतन्त्रजे भवश्वेत भविष्य जन्भवम्बम्लम् भवद्वरगणम् भरति देव

99

इइ। रामीनवोगी उथर्च दान एक द्वार कार ना त्रयमे भदान्त्रयमे विष्ठरेयं भदेशस्य गानु वस्त न्एउयन्भ राग्यवादिनं भेराभिनेनकं निन्द्रग्रेश अववज्ञन (नेपेन ज्ञन । । । इस्म न । १ र न । इस्म । भिडमदान प्रिक्षपत्र न क करता कि कर कि प्राप्त । जन्म हम नगरपरी वश्चन नम् न नुस्ति हम नव्य उः बेहिथमः दविया उ। श्रक्तिना भभने प्रकृत् भ भथन अक्य अस्तिन अक्य अस्ति अस् भथवी। उमीरङभवर दिश्य के केवड्डा निस्डवडा

१५३: इसमह वडाउ प्रदेश अस्पता न इसने वडभ च अष्टन सभन्यन्थः । द्रवाधाः एन्याः न्या हर नग्रह न वश्र प्रमा केलभवभ इवग्रह नगले क चभाइति गहासेव महाश्रम्भहरूसे याध्यक्त यथ्यादे अद्योव नभेप्रवृद्धा उउः प्रमल्क्यलान थडाभभाइ गायहेन्। अ हा स्राप्तिके व अवक्र थ्य अ सरक्ष्य वेव भर्य अ व मन्य व व न य उनेवन् ल अन्दर्ग एक् जीन्य मलक प्रमान थविद्यये चुद्रने परलेक प्रदेश कि प्रमलेक

43.

परायह माउन्यम्बयहर्न निस्त्रं समलेकपानान अधिकिएँ । विरावनसभा इन्हें भूलवले कि विरापी अद्यान्यने सहस्याभाभिष्ठि वये ग्राह्मे प्र दर्भरमा । त्र जे भित्र के प्रक्रिय किया निक् क्लपन् एरेक्ल एरेक्लिल किन्दिश्व र निर्म विवाहकं नी जेदल मल प्रें हथा लिया लिय ने भ विवर्षेक्षान्ते ३ र गापनण्डेहर्षेत्रते अन्ति विएर नगडण्यलण्यक्रमभक्रभन्भ ५ न

धीउंदित अयं विलेल् स्थानिल श्लाइडेडइउने द्रात्र अंद्रभूभीय ने ० इत्ये में पा इत्या वर्गा प्रवित् एँद अल्डायगाम्बर्ड उरम्भागाः द्वार १ वसन् अध्यक्त के विक्त ता का का निवास के के विकास क्षेतिरिलेयने उ एएटिलेयम् उस्किल्किल प्रश्नित न देशयनगविद्यां मण्यान् क्रिभ उल्लेश अनुने नु इरीकरा कुर के विकार या गाउर के महाम द्राक्राभाग्यन्नभरवेड(० जथनिविद्र इड: क्लान्य इस्टारिकिएँ अलिए स्यम् स्थक एउ। चीरिय

44

लहेरिशक्षान्य अधिक से किया अस्पन्तः उस् यागः भाष महिद्ये स्वर्गात नामिश्र स्वर्धन हितानक ति एक दिवेव चड एक गाँ यभे हर युग प नभः स्थान जन कहार्वक्षेत्रालन यक्षे युवीर्व नेरडेनभा प्रतिलड्सः एहिनि प्रयेगालक निषीम् उ न्यमं वनण्य भेक एके विचया भगवत लय मृय वय वयवनभः वभहरेः गहित्यक्षेत्रवद्भावता भग्रेत ज्यायनभः व्यन्त्रदी एडिनि च ने रनिष् मुलि वंभान्य वंभानयन्त्र। यथवार अलक्षर १०

हेिविश्विधिश्रमीक् यूक्ट्ष वद्ग्यम्भक्र लहिंदिए इल एक एक स्वाप्त निक्षा स्वाप्त कि स न ३३:वयमउखये कियेश नियो सामि किन ३३: थलाय नजरा उउविध्वयन्य नच्छा नच्छा उपरेश्वेस् अभर्भ विद्विता की उत्ति हुथ ये ज् ग्ली इथ अडे द के प्रदेश के प्रभाव विश्वये ये उद्येश न भी एउपर भर चाउराङ्गाभिक्रे पिड्रभभभजार उपकृषा कर्षक यभवेत्वम्लथ्उभेउउ। यविन्रभेट्डवन्थ्यभू व ने के विश्वभागारा अवक वेयर भने मार्ग मय

99.

दक्षिण अञ्चल इस्त्र ॥ भित्रति ए स्त्र भवेता न उभः क्रवेद्द्यभेगेववन भेषप्रमम्भ स्ट्रिलेश उड़ी वरिया किला कि विभावित चंडर उड़े कर उड़ों भे लि रानीय निष्यार्थानि लय्यकर अन्य दक्षा कि प्रकारणिकारण सम्बन्धिक । एडिस्मिका ल्डा प्रधानिक विषेत्र यदा नम्बुक्रवक्षेत्रवेत्र विष् रललाभ्यर वारिक्षणाना भभ्यम् दिभेभारभगारत मन्द्रक्षा प्राप्त कि के कि कि कि कि कि कि कि लक्ष्म यथ्यस्थयं स्वारं स्वारं भारत्य ।

अस्तिलम्बद्धा परिभेपारमंभारम्दिभेब्द्धाः हरि हमतिगुर्दे अञ्चलित्रप्य गर्वे अन्तर्थित सुनिया देले क्या निक्र होने प्रतिया भागा ले म ब्रुविश्वभवन्य न व ज ज ज ज जिल्ला वगान्चयषाग्वाभाष्यग्री द्धयेष्ट्रगाचेष्ट्रवा उराज्यम अचेभभाष्ठिर्वाज्ञ चतुः भग्निरः इरे वहलभच अर्थन भाष्य यह गायह नभः अ कक्षा विन्य अद्यापय अ ग्राम्य अ मुपंपाय अ वजलगण्य वज्ञाय उनवङ्गण । ववद्यायाव

म जि

स्थानिक स्थान स्थानिक कि स्थानिक स्थान न्या विकास अवस्थाय विभिन्ने स्थाने। भिन्नः भर लेक्ष्रनच्छ्रेज च्या भ्रष्टक च्युक्त निष्डिय दाल अल्ने अधिन यवे प्रकृतभः अध्कलाने चेत्रचेत्र वयानेकाः इयद्वः देव दिएस्डिएडिप०म् ज्वादिह क्वित्रहातु निर्मित्रहार अबद्धा रचेरमेथपविष्म न्यविद्यान्भाउउउद्यम्य ण्याभागीमायहर्यस्य प्रथमम्बर्कात्र भण्डे ॥वश्रक्षकार्यम् इत्यन्ड भवण्डण्याभागमभा यउभ्रेडभक्तम्यस्य वर्षे

य रहा भेज व्या का अध्या के विष् द्रस्थि। उद्ग्रे विमययया मयक न एक वडा ए विकेश भुजनीभच्छान्विणिः उच्चर्य विशेष न्यवद्रे लि हे भर्षभक् चभर्र जातारे चभर्न नये भने किये जभ भक्तने न्यम नेद एडं एड उड्डिड प्रतिले उर लिक्रिये नुद्रे परये प्रद्रा विभाग प्रदेश न भिक्यं ज्याने अवे अदम्तिहर्य यर्पव भीप भन्न अने किया वेयथज्ञ ने हता विद्वाल कहा सभाः पश्चि वनण्य व भाउडा मन् गता किएया व मार्य

44.

अवव हति पदे अव अवच्य क्य उद्यह नहे प्रभः अरलय प्रधारय मुक्मिप्रेड प्रीपा उत्यय भर अदय ॥ ननेक्य विज्ञेक्य नाकने था श्वाचनय भन लेजिय्य माल्य प्राम्ध्या एक या भागभाष्ट्रक्य प हभारित्रय निक्रिय एतिस्वी प्रमानिक स्वितिः द्वा भभाउभा ॥ न्यद्येद्धनीताचे न्यम्मताम् लेनगर लभामाद्य वस्माउध्यम हन्थ क्षरेशका रहका जनः यमने लाबेमन उर्देनभम्बर एदर दिना उत्तार

एररहेनमः एक्टहेनमः एदविद्देनमः उद्शब्देनमः उद्यहिनभः उद्यम्भः उद्यभः द्रमः द्रमः उन्ययेनभः अ द्वेड्भः द्वद्गक्षण्यः एति प्रश्नम् मानेभ प्रद लक्ष्य डीक्स्य उद्भार प्रभाग उद्देश मार्थहेर भः विद्युष्ट गुल्भाउच विद्युष्टि ध्राविक व्याय उत्ती ग्रम् दथ्य भित्रा यथे सति भित्र कुल्म अल्ने भ इसदं उडेशबक्द जदं उपवच्यक्षेत्रक्षं क्षेत्रवेड क्षितिकाल प्रकालमा विश्वकारियान्त्र इति इति हेश्र दिन्द्र उपेदिश मनेसेकी यहउनीहरू

03 203

उथकवलाकिका अ उसर गाय्दिनभः तीत्रायस्यविक्ते वेम्प्रचम्धाद उनेकथह भूमेम्प उ अस्टर्बर वस् श्चलहर भिरत्भक्तरश्चर स्थान वियत्रे क्षेत्रनानिभेडं क्षव्यद्रभदंकिक गंजनभ मक्षियाने रिक्तियाय रिक्रमाय र द्वनिशावनभक्तमप्रत्य प्रक्रिक भन्दे द्वारी कर्मन जिन्द्र उडिविक्चिः वीमलम क्षेदिक्शवर्देश्वराध्यम चकीतितः स्मिलिडमंदर्शाभागकपनिद्रमः अस्तिक निराएं यहे व र तिथि हिंद विभिन्न व स्टि विद्यु के

विशिव्याण उउनम्बरिक्स्थरम्बिपि वीक्रा भारा यहेच्यान्थाहेबस्य स्थाप ग्रेय्यान्य थ हैवेस्स्भ गवयवन्यी परियम्भ सक्पार व्हाथाउद्धम् नभा गउवस्थियाज्यस्य नेन्त्री उन्मरविधियेल अपनेयस्य यभा उन्निक्ष क किथंडे ने अगल्य भी द्विष्ट किया किया के स्थान किया है। उद्धरप्रकेषवेद्द मेयहिष्डउद्भारभगेड्स द भद्रथक्ष अयेकाम प्रचेद्रन र अवल हुनी द्वानिम्बर्भा इडः क्लिभई एपेडा विज्ञवानेप

200 200

रिड भारेभविषिजभन्देशनगण्यभा रेडेण ग्रायमे ज्ययस्य यह एउ डिश्री मी भई ए।। गहिला य भूउयर्किथ जिन्नाभुज भरउभश्चिमि। रेडेयर यर यभ्ये यह प्रमीभूमीमीकल्प यह भन्य हुउनी किसारियामेबदणहरूयेड विक्रणेश्वकरं के - जुरुष पर र यद्य यद्य उरीय के डे इ. रंग भिश्व के मन भा इड: भणमीमितिनकल्प युज्ञ नावनभक्षरंगडे थये । न्यक्ष्यद्वार्थवार्थि इंदेश्यान्यक्ष्यद्विष् क्ला स्रिक्य विद्या निवस्थ विद्यान निवस्थ । निवस

हेन्य च धर करें ॥ जियम्ब मुल्य मान अपने लिए हैं उम्ह किलंडः भन्न थेशकं चित्रीच्यानेवथदेउन्ज वित्रण्डस्य चायसङ्ग अध्यक्षके इन्नि एक्पन उ ल्ल्येरवर रभक्य ग्रेज्य प्रथतिथे उउः धडा गायह । भाः डीक्रम्ययाय का वेद्रभाग्य णीभि उने द्वार का स्पेर या उत्य नह उन्हरन इत्नाल थड्य धनियन्त्रीः मंडमज्यनेधनात्रयाथ्यं स्मीन स्वाने ग्रभोजनिकाला स्थवमन्ति भिडं करामधंसनं गडनेप्रमण्डारन भक्तानिक।

19°